

राष्ट्रीय एवं राज्य-स्तरीय
शिक्षक पुरस्कार
1975

शिक्षण विभाग, राज्यस्तर
बॉम्बे

राष्ट्रीय एवं राज्य-स्तरीय
शिक्षक पुरस्कार
1975

शिक्षा विभाग, राजस्थान
बीकानेर

राष्ट्रीय एव राज्य-स्तरीय
शिक्षक पुरस्कार
1975

शिक्षा विभाग, राजस्थान
बीकानेर

राष्ट्रपति

सार दण के निष्ठाको का बगर्द तथा सुम-कामगारो देवे हूण सुखे बनी

क्याम हाता है । आचार्य ही दुःख पीड़ी के मर म सुभावाण गंडा
ही दगाता है । एत आचार्यका का एत । तुलकदायिण का समजता
एत हीर मया ही भावना से एत दुःख कलन का प्रयाण करना भावित ।
एत के कलन ही समझता काहित हीर । उचित समजत व इतरी दुःख

आ म मरी दण हर्दिक एतोन है कि व राष्ट्रीय निष्ठा का दगाण
न दे ।

व्यवहारीक अथी उरमर

- - -

:

प्रधानमंत्री

शिक्षण हमारे समाज के सम्मानित सदस्य है। वे विद्या-दान करते हैं और युवा-मानस को गढ़ने हैं, इसलिए वे घाबर और थका के पात्र हैं। छात्र का समाज बहुत पेचीदा बन गया है और इस वजह से उनका कार्य भी ज्यादा मुश्किल और महत्वपूर्ण हो गया है। नैतिक अन्वेषण के लोको की तरह अध्यापकों को भी समय की माँग के अनुसार चलना चाहिए। अध्यापन की पद्धतियों में सुधार करना होगा। अध्यापक और विद्यार्थी के बीच घले घाले परम्परागत सम्बन्धों को फिर से मजबूत बनाना होगा। इस तरह का पुनः सामंजस्य यद्यपि आसान नहीं, लेकिन उमंगे बचा नहीं जा सकता।

एक स्वस्थ शैक्षिक संरचना, जिसे भी नये समाज की चुनौतियाँ होती हैं। हो सकता है कि कुछ दिनों में हमारी कुछ कमियाँ रही हों, किन्तु फिर भी हमने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। छात्र हमें यह आशा होने लगी है कि हम देश के सभी बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था कर सकेंगे। यह हमारी मूल आकांक्षाओं में से एक है और अध्यापकों के निरन्तर प्रयास से ही इसे पूरा किया जा सकता है।

देश में हाल की घटनाओं ने हमें अपने मूल आदर्शों के प्रति फिर से एक बार समर्पित होने के लिए प्रेरित किया है और हमारे लिए यह जरूरी है। अन्य सभी वर्गों को भी अपने-अपने कार्य में, जो उन्हें मौका देता है, नये उन्माद में जुट जाना चाहिए। पहले की अपेक्षा हमारे बहुत कम ज्यादा अच्छा काम कर रहे हैं। अन्य राष्ट्रीय गतिविधियों की तरह कक्षाओं में भी अनुशासन और लगन की एक नई भावना दिखाई दे रही है। हमें इसकी बजाए रखना चाहिए ताकि देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहे।

इन्दिरा गांधी

राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार
1975

श्री हेमाराम शर्मा,
 प्रधानाध्यापक,
 राजकीय जाजोदिया उच्च माध्यमिक विद्यालय,
 मुजानगढ (चूरु)



वयु 52 वर्ष, सेवा 32 वर्ष

तीन दशकों से भी अधिक समय तक निष्ठावान अध्यापक के रूप में सेवाएँ देने वाले श्री हेमाराम शर्मा अध्यात्मिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में अग्रणी रहे हैं। आपके अनेक प्रयत्नों में विद्यालय में शिक्षा का स्तर उन्नत हुआ तथा परीक्षा परिणाम उल्लेखनीय रहे।

प्रधानाध्यापक के नाते शाला के दैनंदिन कार्यों का कुशलतापूर्वक संचालन करते हुए भी श्री शर्मा शिक्षा-विभाग में निरन्तर संलग्न रहे हैं तथा शिक्षण की आधुनिक विधियों के प्रयोग द्वारा महत्कर्म अध्यापकों को मार्गदर्शन देते रहे हैं।

घाप मितभाषी है तथा स्वभाव में मृदु भी। छात्रों में जितने लोकप्रिय हैं उतने ही स्थानीय समाज में भी। आपके प्रभाव से शाला को दो लाख रुपये की जमीन दान में मिली तथा 70,000 रुपये की लागत से भवन-निर्माण कराया गया। अन्य बंधन में भी घापकी प्रेरणा से छात्रों ने पचास हजार रुपये जमा कराए।

शिक्षा सम्बन्धी अनेक शीघ्र-गतिरो एवं कार्यशालाओं में श्री शर्मा का समशीलत्व रखा है तथा जन-गणना जैसे राष्ट्रीय सेवा-कार्य में उन्हें पुरस्कृत किया गया है। बालचर मस्था के घाप जिना बन्धनर है तथा प्रधानाध्यापक बाबरीठ के सचिव।



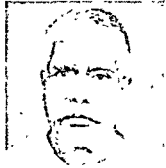
स्व० श्री हरकचन्द,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय न० १,
छापर (बूढ़)

आयु 51 वर्ष, सेवा 29 वर्ष

शैक्षिक योग्यता में मिडिल पास होने हुए भी स्व० श्री हरकचन्द ने प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षण में प्रभूत्वं प्रथमा प्राप्त की। पाठ-योजना बनाने, दस्तावेजों के लिए महापत्र-मामूरी स्वयं तैयार करने और इन प्रकार रोचक ढंग से बालकों के समक्ष पाठ प्रस्तुत करने में आपका सर्व विश्राम रहा। आपके विद्यालय में अविभक्त दस्तावेज-योजना का संचालन काफी-बुद्धि वंशानुगत विधि में सम्पन्न होता रहा।

25 वर्षों तक आप एक ही विद्यालय में सेवाएँ देने रहे। अत एव और शिक्षक समुदाय के लिए आपने प्रथमनीय कार्य किया तो दूसरी ओर शाला के भौतिक विकास में भी कोर-नगर नहीं छोड़ी। अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों में आपने शाला-भवन के लिए 35,000 रुपये जन-सहायता में प्राप्त किए और आवश्यकता की सारी वस्तुएँ शाला में जुटाईं।

'स्कूल चलो अभियान' में श्री आपने विशेष रचि लेखर छात्र-सहाय में असीम वृद्धि की। समुदाय में आपका विशेष सम्मान रहा तथा आपके स्कूल का विशेष स्थान। दिनांक 13-8-75 को आपका आजीवन निधन हो गया।



श्री चमनलाल,
महापक अध्यापक,
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,
दीनतपुरा (श्रीगंगानगर)

आयु 54 वर्ष, सेवा 41 वर्ष

छोटी बच्चाओं के बच्चों को प्यार में पढ़ाने की कला में त्रिपुरा श्री चमनलाल वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध होने के कारण अपने क्षेत्र में सर्वाधिक सम्मानित शिक्षक हैं।

41 वर्ष के मुदीप अध्यापन-काल में अपने नियमितव्यवस्था बच्चाओं तथा पूरी लैंगिंग एवं निर्यात के गाय शिक्षण कार्य किया। अपनी निरन्तर शिक्षण-शैली के कारण आज भी ये बच्चों में लोकप्रिय है। अभिभावकों एवं सहयोगी अध्यापकों में अपने सम्बन्ध बड़े मयूर है। समाज-व्यवस्था के कार्यों में प्राप्त सर्वे वृद्धि-भाग लेने रहे है। 'स्कूल चलो अभियान' तथा विद्यालय-निर्माण में प्राप्त योगदान विशेषतया उल्लेखनीय है।

आप आदर्श अध्यापक है। अपने बसंत्य का पालन अपने बड़ी श्रुति में किया है। अपने स्वच्छिन्त में बच्चे प्रेरणा ग्रहण करने रहे है।



श्री त्रिलोकचन्द तिवारी,
महायक अध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
वाराणसी (चौटा)

आयु 54 वर्ष, सेवा 32 वर्ष

निष्ठावान, मेवाभावी एवं समर्पित शिक्षक के रूप में श्री तिवारी के व्यक्तित्व की राध पहले में ही अपने क्षेत्र में व्याप्त है।

विषय-शिक्षण के रूप में आप छात्रों के साथ पूरी मेहनत करते रहे हैं, विविध शिक्षण-विधियों के प्रयोग द्वारा विषय-वस्तु का उन्हें सम्यक् रीति में ज्ञान देने रहे हैं। आपके परीक्षा-परिणाम सर्वत्र प्रशंसनीय रहे।

फुटबाल एवं हाकी के आप अच्छे खिलाड़ी हैं तथा छात्रों को निर्दिष्ट रूप में कोचिंग देने हैं। सामूहिक कार्यक्रमों में भी आपकी सहगी रही रही है।

समाज-सेवा में आपका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। 1967 की बाढ़ में लोगों की बचाव का धारण करभूत कार्य किया था। गुरुदास-शोध में धन जुटाने, बनेब-घाउट के समय पहरेदारी करने तथा जन-सहयोग द्वारा समाज-संगठन की प्रयोगशाला बनवाने में आपकी नेतृत्व भूमिका नहीं जा सकती। तहसील एवं जिला स्तर पर आप सम्मानित विधि जा चुके हैं।

श्रीमती एच विलिंगटन,
 महात्मक छायाचित्रिका
 राजकीय उच्च प्राथमिक शाळा
 नेवने स्टेशन, जयपूर
 आयु 52 वर्ष तथा 25 वर्ष



कौमुदीनिष्ठ एवं परिश्रमी छायाचित्रिका के रूप में श्रीमती विलिंगटन का कार्य सर्वत्र सरासरीय रहा है। ये छाया के प्रति तथा छायाचित्र के प्रति उत्कण्ठता का कार्य करती रही हैं तथा छायाचित्र में अनुशासन, छायाचित्रकार तथा श्रम का प्रति प्रतिष्ठा का भाव प्रदर्शनी रहा है।

साहित्यिक प्रवृत्तियों में छायाचित्रा विज्ञान सम्बन्धित हुआ है। 1955 में छाया चित्रकार महान भारत स्वराज्य के राष्ट्रीय छायाचित्रण में सहकर्मि हैं। कुछ दिनों तक साहित्य में छाया चित्रकार के रूप में कार्य किया है तथा विद्यार्थी 18-19 वर्षों में जयपुर में शिक्षण कार्य करने के रूप में कार्यरत निरन्तर सेवाएं दे रही हैं।

एक छायाचित्रिका तथा एक राष्ट्र के रूप में कार्यरती महिला अनुभवकार हैं।



श्रीमती एच. विंलिंगटन,
महासक सप्यापिका,
राजकीय उच्च प्राथमिक शाळा,
रेलवे स्टेशन, जयपुर
आयु 52 वर्ष, मेरा 25 वर्ष

कर्मचारी एक पत्रिका सप्यापिका के रूप में श्रीमती विंलिंगटन का कार्य सर्वप्रथम राष्ट्रीय स्तर पर है। ये शाखा के प्रति तथा छात्राओं के प्रति लगन में कार्य करती रही हैं तथा छात्राओं में अनुशासन, आत्मविश्वास तथा श्रम के प्रति निष्ठा के भाव भरती रही हैं।

सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में छात्रों का विशेष ध्यान परिलक्षित हुआ है। 1955 में छात्र सत्रस्थान राज्य भारत स्टाडेंट व साइंटिफिक सोसायटी में सम्मिलित हुए। बुनबुन एक सांस्कृतिक में छात्रों का श्रेष्ठ प्रदर्शन प्राप्त किया है तथा विद्यार्थी 18-19 वर्षों में जयपुर में इन्डियन वॉर लीडर के रूप में अत्यन्त निर्यात में कार्य कर रही हैं।

एक सप्यापिका तथा एक साइंटिफिक के रूप में छात्रों के कार्य अनुभवपूर्ण है।

1.
2.
3.

श्री दयाराम गुप्ता,
 प्रधानाध्यापक,
 राजकीय प्राथमिक विद्यालय,
 कृमागतद पार्क, ब्यावर (झजमेर)
 आयु 45 वर्ष, सेवा 24 वर्ष



श्री दयाराम गुप्ता ने प्राथमिक छात्राओं में ही काम करने-करते विज्ञान, भाषा व गणित विषयों में शिक्षण हेतु सख्त उपयोग उपकरण निर्मित किए तथा उनके प्रभावशाली प्रयोग द्वारा छात्रों को आभासित किया। उपकरणों का निर्माण शिक्षा-क्षेत्र में छात्रों को ही उपलब्ध है।

शैक्षिक कार्यक्रमों तथा शिक्षकों में भाग लेकर नये शैक्षिक विचारों में सफल होने तथा छात्रों की प्रतिभा में नये-नये शैक्षिक प्रयोग करने में छात्र सदैव सफल रहे हैं।

शैक्षिक मूल्यों के अति धी गुणा की प्रतिभा का परिचय शिक्षकों के माध्यम से भी मिलता रहा है। यदि, बालाचार, साधक, सादक एवं स्वतन्त्रता के माध्यम से छात्र जन-समाज में सम्मानित हैं।



श्री धनसिंह,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय,
मुन्दरपुरा, (प० म० तानेडा) बूंदी
आयु 37 वर्ष, सेवा 16 वर्ष

आनवरत धर्म से विद्यालय की शैक्षिक व भौतिक समृद्धि के लिए लगे रहने वाले श्री धनसिंह स्वैच्छिक रूप से शिक्षा-कार्यों में सलगन एक समर्पित अध्यापक है।

अब तक के सेवाकाल में आप पिछड़ी जन-जातियों के समुदाय में शिक्षा प्रसार के लिए त्रियार्थन रहे हैं। तानेडा पंचायत समिति में आप पहले व्यक्ति हैं जो पहाड़ी प्रचल में बसने वाले भीलों को माध्य बनाने का सबल्य लेकर चले और अपने अभियान में सफल रहे।

विद्यालय के कुशल संचालन, राष्ट्रीय बायो मंडलिकारि तथा समुदाय के माघ सद्भावनापूर्ण व्यवहार के लिए आप प्रशंसा के पात्र हैं। जिला स्तर पर भी आप पुरस्कृत व सम्मानित किए जा चुके हैं।



श्री इन्द्रमणि त्रिपाठी,

प्रधानाध्यापक,

राजकीय प्राथमिक विद्यालय,

कनिजरी द्वार, शाहपुरा (भीमवाड़ा)

आयु 51 वर्ष मेवा 31 वर्ष

स्वैच्छित पद्धति में अधिभक्त-उत्कर्ष शिक्षण की संज्ञक व प्रभावी बनाने वाले श्री त्रिपाठी पूर्ण निष्ठा के साथ बच्चों को पढ़ाने हैं तथा नियमित रूप में उनके शैक्षणिक कार्य की जाँच करते हैं।

बच्चे छात्रके सौम्य स्वभाव तथा छात्रसंघ व्यक्तित्व में प्रभावित हैं तथा छात्रके हर प्रकार के पूरा करने के लिए तत्पर रहते हैं। गृहयोगी अध्यापक भी छात्रके प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

विद्यालय में स्वच्छता तथा अनुशासन का सुन्दर वातावरण रखना छात्रकी सर्वांगिक विकासा के लिये आवश्यक है। सामाजिक अभियान में भी छात्रका योगदान प्रशंसा के योग्य रहता है। छात्रके सर्वांगिक व्यक्तित्व द्वारा जनसहयोग में विद्यालय-भवन बनवाने तथा छात्रसंघ स्थापना करने में भी छात्रकी सहायता उल्लेखनीय रही है।



श्री बंशीसिंह चौहान,

प्रधानाचार्य
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
चौहान चौक, ग्वावर (मन्सिर)

आयु 49 वर्ष, शरीर 24 वर्ष

श्री विभक्त-दुबारी को नियमित रूप से वैज्ञानिक बतान की शिक्षा में सहायता प्राप्त कर रहे हैं। श्री बंशीसिंह चौहान प्रधानाचार्य के रूप में नियुक्त हुए हैं। प्रधानाचार्य के रूप में भी इन शिक्षकों में सर्वोपरि हैं।

बच्चों को विषयवस्तु का ज्ञान हासिल करने में इनके उत्साह में बड़ा योगदान है। शिक्षण में अनुभवों को भी प्रयोग में लाने का प्रयत्न करते हैं।

शैक्षिक शिबिरों में कार्य सहायक रूप में कार्य करते हैं। बच्चों को प्रेरित करने में बहुत ही प्रयत्न करते हैं, साथ ही साथ बच्चों को भी प्रेरित करते हैं।

आप अनुशासन-प्रिय हैं, बच्चा का व्यक्तिगत विकास करने में बड़ा उत्साह लिए। शैक्षणिक शिक्षण को व्यवस्था करने में हैं।

सांस्कृतिक-कार्यक्रम, जल-संयोजक, स्वयंसेवक, बच्चों को प्रेरित करने में बड़ा योगदान करते हैं। शिक्षण-कार्यक्रम को बच्चा से शुरू करते हैं। बच्चों को प्रेरित करने में बड़ा योगदान करते हैं।

श्री बीरबल शर्मा,
 प्रधानाध्यापक,
 बाल मन्दिर,
 पिलानी (भुवनेश्वर)



आयु 54 वर्ष, सेवा 37 वर्ष

शुद्ध ही खेल में बच्चों को शिक्षा देने के उद्देश्य से त्रिभुवन बाल मन्दिर में श्री बीरबल शर्मा एक सौ साधक की भूमि विगत 37 वर्षों में साधनागत रहे हैं। बच्चा के बीच बच्चा बनकर उठते गरीब दिशा को धीरे से जाने, उनमें अच्युत सस्कार भरने तथा रोबक डग में उन्नत पढ़ाने में ध्यान प्रदान किया जाता है। बच्चों का निरालय विषयगत, अभिभावकों की धृष्टता तथा समाज का सम्मान धारण करने का रूप में बताया है।

आप राष्ट्रीय व सांस्कृतिक कार्यों में भी रुचि लेते हैं तथा धर्म के प्रति निष्ठा का भाव बच्चों में प्रसार करते हैं।

प्रधानाध्यापक के लम्बे अनुभवों में समृद्ध धारणा स्कूल घनेक कारोपयोगी प्रवृत्तियों का केन्द्र है तथा नगर में उसका विशिष्ट स्थान बन गया है।



श्री कल्याणमहाम मिश्र,
 प्रधानाध्यापक
 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय,
 रजौटेन्सी, जयपुर



आयु 53 वर्ष सेवा 29 वर्ष

एक अध्यापक अपनी रचनात्मक क्षमता, सुझ-बुझ एवं लगन के द्वारा एक नयी क्षमता विद्यालय या केंद्र में वादाकल्प कर सकता है जसका एकान्त उदाहरण है - श्री कल्याणमहाम मिश्र ।

एक तरफ आपने मैट्रिक में एम० ए०, बी० ए० तथा निरन्तर अपनी व्यावसायिक प्रगति का बरत रखा तो दूसरी ओर अनेक उच्च प्राथमिक शाखाओं की शैक्षिक प्रगति के कोटिमान प्रगति किये । जिन-जिन विद्यालयों में आप रहे, वहाँ-वहाँ एक मात्र अनेक प्रवर्तिका बनीं, प्राचार्याणां राज म यी गईं और छात्रों व अध्यापकों में एक अभूतपूर्व उत्साह देया गया । विद्यालयों में नई जान धा गईं ।

आप राष्ट्रीय भावनाओं के पोषक तथा निस्वार्थ सेवाभावी अध्यापक हैं । अपनी का विद्यालय आपकी त्यागपूर्ण सेवाओं को सभी भी विस्मृत नहीं कर सकता ।

आप सर्वगुणसम्पन्न आदर्श शिक्षक हैं, कुशल संचालक तथा अक्षर लेखक हैं । राज्य शिक्षा मन्शन द्वारा आपका नेत्र प्रथम पुरस्कृत हुआ था । अल्प-वयस में छात्रों और अध्यापकों के मन प्रविष्ट गान गाते हैं तो आपकी स्तूति को पवित्र हस्तारण्यों का प्रथम पुरस्कार भी मिल चुका है ।

श्रीमती सरला सबसेना,

प्रधानाध्यापिका,

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय,
वाटिका (जयपुर)

आयु 42 वर्ष, सेवा 24 वर्ष



विषय-शिक्षण में परिश्रम से अध्यापन कार्य करने तथा अल्पे परिणाम देने हेतु श्रीमती सरला सरला
अनेक प्रशंसा-पत्र प्राप्त कर चुकी हैं।

आप 'यथा नाम तथा युग्म' हैं। सहयोगियों और स्थानीय समाज में आपने अनु स्वरूप के कारण
सम्मानित हैं। पिछले कई वर्षों में आप उच्च प्राथमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापिका के रूप में कार्य
कर चुकी हैं तथा आपने नेतृत्व एवं कुशल-संचालन के गुणों का परिचय दे चुकी हैं।

अध्यापक-अभिभावक सभ का सटन व नियन्त्रण, मेतहुद-प्रतियोगिताएँ, साहित्य व सांस्कृतिक
आयोजनों में भी आपने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

आपकी कार्य-प्रणाली रोचक है तथा विद्यालय की स्वच्छता व सज्जा में आप विशेष रूप से रूचि
लेती हैं।



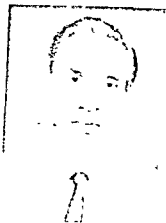
श्री मनोहरलाल सोमानी,

वसिष्ठ-प्रधापक

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

द्वामीद (भीलवाणा)

आयु 49 वर्ष, सेवा 25 वर्ष



श्री आपने सेवाकाल में निरन्तर 90 प्रतिशत परीक्षा-परिणाम सुन्दरता से अर्जित करने में भी सामर्थ्य प्रकट किया है। आपका अध्यापक प्रभावशाली है तथा स्वेच्छा से नये-नये प्रोजेक्ट लेकर छात्रों का साक्षात्कार करते हैं।

भूगोल विषय के आप ज्ञाना है तथा एक विद्यार्थी की भाँति नये-नये ज्ञान की प्राप्ति हेतु उत्सुक रहते हैं। भूगोल संबंधी समस्याओं में तो भाग लेते ही हैं, शिक्षा संबंधी विचारों को प्रकट करते हैं तथा समीक्षाओं में भी सक्रिय रहे हैं।

विद्यालय के शिक्षक वित्तव्यय को एक स्तर तक पहुँचाने में आपने प्रयोग संबंध प्रकट करते हैं। रचनात्मक कार्यों के संचालन की आप में अत्यंत क्षमता है तथा आपने सुदृढ़ व्यक्तित्व एवं शिक्षण के कारण आप छात्र-वर्ग में लोकप्रिय हैं।



श्री भैरवचंद्र चूरा,

द्विगुण-सम्पादक

राजकीय मातृत्व उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर

आयु 45 वर्ष सेवा 20 वर्ष

श्री द्विगुण-सम्पादक शिक्षक अपनी प्रतिभा एवं व्यापक अनुभव द्वारा छात्रों को प्रभावित व समुदाय का
चितना करना बन सकता है इसका एक उत्कृष्ट प्रमाण है श्री भैरवचंद्र चूरा ।

शिक्षण और शिक्षणोपर दाता शिक्षण में व्यापक समर्थन एवं नवीन विचारों से है । विद्यार्थियों
शिक्षक के माने जाने का द्वितीय है । उच्च गुणवत्ता शिक्षण विद्यालय का प्रमुख शिक्षक महाशय
पाल-सामर्थी द्वारा यह व्यक्तित्व व्यापक कार्य व विद्यार्थियों को प्रभावित करने के लिए व्यापक कार्य
में केवल मान-प्रतिष्ठा नहीं है बल्कि एक उत्कृष्ट शिक्षण प्रणाली है ।

शिक्षण विषय में व्यापक विद्यालय है तथा यह एक उत्कृष्ट शिक्षण प्रणाली है । शिक्षण में
एक कार्य एवं गुरुत्व शिक्षण में व्यापक समर्थन प्रदान करता है । यह एक उत्कृष्ट शिक्षण प्रणाली है
बादशाहाबादी में भाग में लूने है ।

व्यापक व व्यापक-समाज में व्यापक शिक्षण प्रणाली है । व्यापक व व्यापक शिक्षण में व्यापक
एक है तथा व्यापक कार्य में व्यापक समर्थन प्रदान करता है । व्यापक व व्यापक शिक्षण प्रणाली
तथा शिक्षण विभाग में समुदाय प्रणाली में व्यापक समर्थन प्रदान करता है । व्यापक व व्यापक कार्य
एक उच्च गुणवत्ता का कार्य भी शिक्षण है ।

श्री भेरूचवश चूरा,
वरिष्ठ-अध्यापक,
राजकीय मादून उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बीकानेर

आयु 45 वर्ष, वेवा 20 वर्ष



एक दृष्टि-सम्पन्न शिक्षक आपनी प्रतिभा एवं आत्मीय व्यवहार द्वारा छात्रों, अध्यापकों व समुदाय का चिन्ता चहेता बन सकता है, इसका एक जीवन्त प्रमाण है श्री भेरूचवश चूरा ।

शिक्षण और शिक्षणोत्तर दोनों दिशाओं में आपने समान गति से उल्लेखनीय सेवाएँ दी हैं । विषय-शिक्षक के ताने धापे अद्वितीय है । उत्तम पाठ-योजना, विविध विधियों का प्रयोग, अतिरिक्त सहायक पाठ्य-आमर्श, छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान आदि के निश्चित व्यवहार का ही फल है कि आपने छात्र न केवल पान-प्रतिपान उमीर्ण होते हैं बरन् बोर्ड में सर्वोत्कृष्ट स्थान पाते हैं ।

वाणिज्य विषय में आप विद्वान हैं तथा नई नई जानकारी के लिए उत्सुक रहते हैं । 'वाणिज्य में नूतन कार्य एवं मनुष्य' विषय पर आपने सर्व-रिपोर्ट तैयार की है । अब तक अनेक मण्डलियों एवं कार्यपालनाओं में भाग ले चुके हैं ।

स्वाउटिंग व समाज-सेवा में आपका विशेष रुचन है । स्वाउटर के ताने अनेक शिबिरों में भाग ले चुके हैं तथा थोरे-थोरे के लिए प्रत्येक-प्रकार का काम चुके हैं । बीकानेर में 'प्रोग्रेशनल समिति' तथा शिक्षा-विभाग के सदस्य प्रदाओं में जो साक्षरता-प्रसार अभियान चलाया गया था, आपने पार बरं तक उसमें सुपरवाइजर का कार्य भी किया है ।

श्री भैरवराज नुगा,
 वरिष्ठ छात्राध्यक्ष
 राजकीय मातृक उच्च माध्यमिक विद्यालय
 बीकानेर
 आयु 45 वर्ष तथा 20 वर्ष



एक दृष्टि-भंग्यमय शिक्षक अपनी प्रतिभा एक छात्रोंके लक्ष्मण रूप में प्रकट कर सकेगा तभी वह शिक्षक के रूप में अपना सच्चे रूप प्रकट कर सकेगा।

शिक्षण और शिक्षणोत्तर दोनों शिक्षणों में ही एक ही रूप में ही प्रकट हो सकते हैं। शिक्षक के ज्ञान ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। उच्चतम ज्ञान ही शिक्षक के लिए ही प्रकट हो सकता है। शिक्षक के ज्ञान ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। उच्चतम ज्ञान ही शिक्षक के लिए ही प्रकट हो सकता है। शिक्षक के ज्ञान ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। उच्चतम ज्ञान ही शिक्षक के लिए ही प्रकट हो सकता है।

वाणिज्य विषय के छात्र विद्वान हैं तथा उच्चतम ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हैं। शिक्षक के ज्ञान ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। उच्चतम ज्ञान ही शिक्षक के लिए ही प्रकट हो सकता है। शिक्षक के ज्ञान ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। उच्चतम ज्ञान ही शिक्षक के लिए ही प्रकट हो सकता है।

शिक्षण ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। शिक्षक के ज्ञान ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। उच्चतम ज्ञान ही शिक्षक के लिए ही प्रकट हो सकता है। शिक्षक के ज्ञान ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। उच्चतम ज्ञान ही शिक्षक के लिए ही प्रकट हो सकता है। शिक्षक के ज्ञान ही छात्रोंके ज्ञान के लिए आधार है। उच्चतम ज्ञान ही शिक्षक के लिए ही प्रकट हो सकता है।

श्रीमती पूर्णिमा पंडित,
 वरिष्ठ अध्यापिका,
 राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
 श्रीकांतेर

आयु 45 वर्ष, सेवा 26 वर्ष



पूर्णित के क्षेत्र में श्रीमती पूर्णिमा पंडित एक स्थापित एवं बहुभुत नाम है। सन् 1944 में प्राय
 आशाशुभाशी की बन्नाचार है। कठ-सगीन में जितनी विपुल है, विविध वाद्य-यंत्रों में भी उननी
 ही प्रवीण है। शास्त्रीय एवं लोकनृत्यों में प्राय समान रूप में धारणत है।

एक बन्नाचार की हैमियत में स्वयं गा लेना सामान होता है, पर धरनी धमिलवित शैली में दूसरा रंग
 तैयार करना और विशेषकर छोटी-छोटी बालिकाओं को निगाना सामान काम नहीं है। पर धन्युक्ति
 नहीं होगी यदि कहा जाए कि श्रीमती पंडित एक कुशल संगीत शिक्षिका है। धारके परीक्षा-परिणाम
 सदैव उत्कृष्टवर्तीय रहे है।

भारत के राज्यों की सांस्कृतिक अरिंकी धारके मानव में है तथा बालिकाओं के माध्यम में धार उन्
 कभी मच पर तो कभी विस्तीर्णुं हवन पर प्रस्तुत करनी रहती है। विरदने धारतत्र दिवस पर 300
 बालिकाओं का स्टैडियम में सांस्कृतिक नृत्य दीक्षानेर के दर्शक धरनी नहीं भूते।

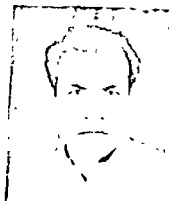
श्रीमती पंडित संगीत की संडाभिनक बर्चाओं में भी निरन्तर भाग लेनी रहती है। संगीत भारती की
 परोपिठियों तथा राजन्वत संगीत नाटक सभासमा की कार्यक्रमों में धारका धोरदात उन्नेमनीय
 रहा है।

श्री श्यामस्वरूप अग्रवाल,
 वरिष्ठ प्राध्यापक
 राजकीय केंवरपदा उच्च माध्यमिक विद्यालय
 उदयपुर
 आयु 44 वर्ष सेवा 25 वर्ष



पुस्तकों के सर्वांगीण विकास के प्रावधानों विद्यालयी सर्वांगीणता के अंग है तथा समग्रता के अंग है। श्री श्यामस्वरूप अग्रवाल अपने विषय के विद्वान हैं तथा अपने अध्यापक एवं पशुपालक के प्रणामक के रूप में सुपरिचित हैं। पारी-द्वारा के रूप में प्राय विद्यालय की हर सर्वांगीणता का अंग है तथा नदी-तट प्रायोजनाओं का संचालन करने हेतु हृत्-आकर्षण रहते हैं। प्राय परिश्रमी शिक्षक हैं तथा छात्रों के मानसिक स्वस्थ की विशेषज्ञता के अंग हैं तथा छात्रों के जीवन-व्यवस्था का ध्यान रखते हैं। शिक्षण के दौरान विविध विधियों का प्रयोग करते हैं तथा निष्पत्ति हैं। जन-प्रतिष्ठान परीक्षा परिष्कार करने के अंग हैं तथा विद्यार्थियों द्वारा इन प्रणामक प्रदान किया जा चुका है। सामाजिक कार्यों में भी प्रायका योगदान उत्कृष्टतरी है। *सर्वजनिक जीवन के अंग हैं तथा सामाजिक जीवन की प्रमुख गहराओं के प्राय विद्वान हैं।* बनों में सर्वांगीण हैं। शिक्षा संबंधी विषयों पर अपने द्वारा विद्वान प्रदान किए हैं जिसे *‘A Critical Study of Factors of Job Satisfaction of Secondary School Teachers’* विद्वान पर *1978* रहते हैं।

श्री जसवन्तसिंह पगारिया,
वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बूंदी



आयु 43 वर्ष, सेवा 26 वर्ष

कई प्रकार की तकनीकों के प्रयोग द्वारा अपने कक्षा शिक्षण को समृद्ध बनाए गए तथा विद्यार्थियों के शैक्षिक उपग्रहण में प्रतिदिन तत्पर रहने वाले श्री पगारिया बड़े ही परिश्रमी एवं स्वयंसेवक शिक्षक माने जाते हैं। बच्चों में छात्रोंको विशेष स्नेह है तथा कक्षा के अलावा ही एक कमरे में छात्रों के वर्गों को उनकी सुविधानुसार अनिश्चित समय में पढ़ाते हैं। एसी ही शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में भी उनके साथ व्यस्त रहते हैं, उन्हें प्रेरित व प्रोत्साहित करते हैं। यह ध्यान रखना कि छात्रों को समभावित सुर है।

छात्र अपने विषय में पारंगत हैं। छात्र द्वारा खिन्न भ्रमों को एक पुरस्कृत उच्च माध्यमिक विद्यालय में लिए बौद्ध द्वारा स्वीकृत की गई है। छात्रों की परीक्षा-परिष्कार संस्थाओं में कार्य करते हैं। श्री पगारिया स्वभाव में मिलनसार व मेधा-भावी हैं। छात्रों के उपग्रहण में एक छात्र को पढ़ाते हैं तथा माध्यमिक अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के साथ छात्रों को पढ़ाते हैं। छात्रों को पढ़ाते हैं तथा भी छात्रों को योगदान उल्लेखनीय है।

छात्रों की शिक्षण मुक्तों एवं सेवाओं को ध्यान में रखते हुए 1972 के छात्रों को पढ़ाते हैं। छात्रों को पढ़ाते हैं तथा भी छात्रों को पुरस्कृत किया था।



श्री कुशलराज मेहता,

वरिष्ठ अध्यापक

राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय,

नान्ता महल, बोटा

आयु 42 वर्ष, सेवा 22 वर्ष

यह शैक्षिक प्रयोगों में अग्रणी श्री कुशलराज मेहता अपने विभाग-संगठन के लिए असीम प्रतिबन्धन करते हैं। गणित-शिक्षण को रोचक व मुख्यवस्तु बनाने की दिशा में आपका अग्रणी योगदान है। वक्ता-शिक्षण की मॉडर्न पद्धति आप छात्रों में छात्रों तक को शिक्षा में उत्तम योगदान करने के लिए प्रेरित करते हैं।

नैदानिक-परिक्षण प्रोजेक्ट, मूल्यांकन-विधियों तथा उपपरी-विभागात्मक कार्य प्रदर्शित करने का आवश्यकतानुसार अन्य विद्यालयों में मार्गदर्शन हेतु आमंत्रित किए जाते हैं।

सामान्य-विज्ञान एवं गणित, धनुसधान संशोधनार्थी, नैदानिक परीक्षण एवं उपकरणों का विभाग अभिन्नमित-अध्ययन, मूल्यांकन तथा मास्ट सबधी अन्य कार्यवाहियों, निर्देशन तथा मार्गदर्शकों में आपने भाग लिया है तथा अपनी प्रतिभा का प्रत्येक क्षण पर व्यय करते हैं।

विज्ञान में आप द्वारा निर्देशित माडल राज्य-स्तर पर पुस्तकें प्रकाशित की हैं। शिक्षण पर आपका दो बार विशेष मेधावी तथा उत्तम विषयाध्ययक के रूप में पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। आपका विशेष प्रयत्न में बोटा स्थित महात्मा गांधी उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक के रूप में 20,000 रुपये की लागत का भौतिक-विज्ञान प्रयोगशाला-समावेश बनवाया गया था। शिक्षण के लिए भी आपने 15,000 रुपये का अति-उत्तम सुदाना।



श्री लॉवाराम,
वरिष्ठ अध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
नूपा (भुझुनु)

आयु 42 वर्ष, सेवा 23 वर्ष

तोई परीक्षा में जन-प्रतिष्ठान परिणाम देने वाले श्री लॉवाराम विद्यालय की हर शैक्षिक गति-विधि में मन्वित रहे हैं। शिक्षानुसंधान, शाला-प्रशासन, सह-शा्ट्य प्रकृतिपरी, मेन्सूद, समाज-सेवा प्रादि तैबानेक बापों में आप समान गति एब उल्माह से लगे रहते हैं। इतनी सारी प्रकृतिपरी में आपना तुलन बनाए रखते हुए सलान रहना धीर प्रत्येक बापों की पूरी कुशलता के साथ सम्पादित करना आपके व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण है।

अपय-शिक्षक के रूप में आप छात्रों में, शिक्षणोत्तर बापों में लगे रहने के कारण समाज में तथा शैक्षिक मर्यादाओं, अनुसंधान एब सुपरविजन में विशेष रूभान के कारण अधिाकारियों में सम्मानित है।

जला-न्तरीम शिक्षानुसंधान बाकीट के आप मन्वित हैं तथा अनुसंधान सम्बन्धी प्रायोग-तापों का सुपरविजन कर रहे हैं। आप पुटबाल के शब्दे गिनतारी हैं तथा मेन्सूद प्रतिप्रादित्तापों का कुशलतापूर्वक सधासन करते हैं।

सुश्री यशोदा रानी सबसेना,
 प्रधानाध्यापिका
 राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय,
 भबानीमडी (भानावाड़)
 आयु 46 वर्ष, सेवा 22 वर्ष



सुश्री यशोदा रानी श्रेष्ठ अध्यापिका, कुशल प्रशामिका तथा बन्धन-मुक्त हैं। मन्त्रण धारणा विन विषय है, अत आर्ष ग्रन्थो तथा अमर काव्यो के अध्ययन मे आपकी गहरी रुचि है।

आपका शिक्षण प्रभावशाली है तथा परीक्षा-परिणाम उत्तम रहे है।

प्रधानाध्यापिका के नाते छात्राओं की पटनाभिर्हचि के विकास पुस्तकालयों-परम्परा मार्गिक कार्यनुभव, नैतिक-शिक्षा, आंतरिक-मूल्यांकन, अल्प-वचन एवं मार्गिक कार्यो व सुपरस्त्रिका आयोजन मे आप लगी रहती हैं। बालिकाओं से ही गहरी, सहायोगी सम्बन्धिताया तथा स्वातंत्र्य समार में भी आपके सबंध मुहु है।

केलूद प्रतियोगिताओं वा उत्तम रीति मे आयोजन करना आपकी अनिम्न विशेषता है।

श्री यशवंतसिंह भण्डारी,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
गीगला (उदयपुर)
आयु 51 वर्ष, सेवा 29 वर्ष



गोल-शिक्षक के रूप में स्थापित-प्राप्त श्री भण्डारी एक उत्साही प्रधानाध्यापक भी हैं ।

अनेकानेक शिक्षण विधियों के प्रयोग द्वारा अपने अध्यापन को यथार्थ और प्रारणवान बनाना, नई-नई पत्रिकाएँ पढ़ना तथा विषयाध्यापकों से चर्चा-परिचर्चा करना आपका स्वाभाविक गुण है ।

प्रधानाध्यापक के रूप में विगत 13 वर्षों का आपका कार्यकाल अनेक शैक्षिक एवं मह-शैक्षिक प्रवृत्तियों में उपलब्धियों का बाल रहा है । विद्यालय-संगम, बार्सानुभव, मेनकूद-प्रतिपोगिताएँ, मोरु-गानियामेण्ट, धर्मदान, जन-सहयोग, मेले, बाल-भमारोट, समाज-सेवा आदि में आपकी प्रयत्नोप सेवाएँ अविस्मरणीय रहेगी ।

अभिभावकों एवं जन-समाज में आपने गवध स्नेहपूर्ण रहे हैं तथा उनके माध्यम से अपने पर्याप्त जन-सहयोग प्राप्त किया है ।

श्री भगवतस्वरूप शील,
 प्रधानाध्यापक,
 राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
 चदवाजी (जयपुर)
 आयु 43 वर्ष, सेवा 20 वर्ष



श्री शील बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं सफल अध्यापक हैं। अध्यापन व्यवसाय को प्राप अपने जीवन का मिशन मानते हैं।

प्राप अध्यापक तथा अपने विषय के आधिकारिक विद्वान हैं। बड़े श्रम में पाठ-योजनाएँ बनाने पर पढ़ाने हैं तथा बच्चों की हर जिज्ञासा शांत करते हैं। प्राप शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों में भी वर्षों तक पढ़ा चुके हैं। प्रतः शिक्षा, शिक्षण-विधियों, सहायक-उपकरणों एवं मूल्यांकन विधियों से सुपरिचित हैं तथा कक्षा-शिक्षण में उनका उपयोग करते हैं। प्राप द्वारा निर्मित कुछ शिक्षण-उपकरण जिला एवं राज्य-स्तर पर प्रदर्शित किए जा चुके हैं।

शिक्षा संबंधी कार्यशालाओं में गोष्ठियों तथा शिविरों में प्राप बहुत सक्रिय रहते हैं तथा अनेक बार महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के रूप में भी कार्य कर चुके हैं।

जिस शिरो भी विद्यालय में प्राप रहे, हर गति-विधि के केन्द्र-बिन्दु बनकर रहे। शांति-गति, वाद-विवाद, छात्र-संगठन, खेल, कवि-सम्मेलन, सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता, प्राग्दर्शक-सूच्यारण, कार्यानुभव आदि माना प्रकार की प्रवृत्तियों का कुशल संचालन किया, पुरस्कार दिवङ्गाएँ तथा प्रशंसा-पत्र प्राप्त किए।



श्री कानसिंह करनावट,
प्रधानाचार्य
राजकीय नवीन उच्च माध्यमिक विद्यालय
त्रोपपुर

आयु 51 वर्ष, सेवा 24 वर्ष

बालकों के शारीरिक, मानसिक व सर्वेसाध्यक उपद्रव में धारणा रखने वाले श्री कानसिंह प्रभावशाली अध्यापक तथा दृष्टि-नम्यत्र प्रधानाचार्य के रूप में सम्मानित हैं।

नियमित अध्यापन व जीव कार्य में ध्यान स्वयं नगे रहते हैं तथा अध्यापन का भी प्रेरित करते हैं। ध्यान नवाचारों में भी रुचि लेते हैं तथा अब तक विभिन्न अभिकल्पों द्वारा आभोजित दस शैलीयिता में भाग ले चुके हैं।

धारकी देख-रेख में विद्यालय में अनेक प्रायासपूर्ण कार्य रही हैं। अंतर्गत, एन.सी.सी., एकाउंटिंग, अल्प-वचन, छात्र-बो-आपरेटिव, साहस-वचन आदि एन.सी.सी. प्रकृतियों में उत्साहपूर्वक संस्थानित की जा रही हैं। अत्यंत प्रवृत्ति में ध्यान स्वयं रुचि में काम करते हैं। अतः एकांकी अध्यापन में भी अद्भुत उत्साह देखने को मिलता है।

समाज-सेवा, समाज-शिक्षा तथा बाल-व्य-सेवा में धारने सफलतापूर्वक कार्य किए तथा अत्यंत-वचन में अतिवृत्ति हैं।

श्री बालूलाल जोशी,
 प्रधानाचार्य,
 राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय,
 शाहपुरा (भीमवाडा)
 आयु 51 वर्ष, सेवा 32 वर्ष



32 वर्ष के सुदीर्घ सेवाकाल में श्री जोशी ने एक छोटा विषयाध्यापक के रूप में, तो दूसरी छोटा कुशल प्रशासक के रूप में नाम बनाया है। अर्द्धे पंगीशा-परिणामों के लिए आप अपने काल सम्मानित किए जा चुके हैं।

आप बड़े मेहनती, शिष्ट तथा दृष्टि-सम्पन्न व्यक्ति हैं। विद्यालय तथा छात्रों के स्वरोत्थान हेतु आपने कई प्रायोजनार्थ हाथ में लीं, उन्हें पूरा किया तथा शिक्षा को लाभान्वित किया।

साक्षरता-प्रसार में आपकी विशेष रूचि रही। शाहपुरा में करीब 3 वर्ष तक साक्षरता-केन्द्रों का कुशल संचालन किया। तेलहूद प्रतियोगिताओं के आयोजनों में भी आपकी गहरी रूचि रही है।

शिक्षा सबधी मगोष्ठियों तथा शिबिरो में आप अनवरत भाग लेते हैं, नये विचारों में आपने सहयोगियों को संबलन करते हैं तथा नये-नये शैक्षिक प्रयोग किया करते हैं।

श्री फकीरचन्द,
 प्रधानाध्यापक,
 राजस्थीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
 बालोनरा (बाडमेर)
 आयु 49 वर्ष, सेवा 28 वर्ष



शिक्षक के रूप में विरंगन अच्छे परिणाम देने वाले श्री फकीरचन्द शैक्षिक कार्यों में रुचि-विषय-ज्ञान तथा अनुशासन-प्रिय अध्यापक हैं। जन-शिक्षा आपका प्रमुख ध्येय रहा है। नियमित सम्पन्नमेवाओं के साथ ही साथ अनिश्चित समय में आपने प्रौढ शिक्षा की गति-वृद्धि भी राजकीय की है।

सन्तानित का अधिकांश सेवाकाल चूरु जिले के राजगढ़ गाँव में बीता है, अतः वहाँ के समाज के चूँकि आपसबन्धन में आपका योगदान अविस्मरणीय कहा जाएगा। सर्वे हितकारी सभा में 4 वर्ष तक शैक्षिक उद्देश्यों के रूप में आपने पुस्तकालयों, वाचनालयों एवं साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का अत्यन्तक लया।

सचान्त विपत्ती गहरी रुचि का प्रमाण इस तथ्य में मिलता है कि आप राजगढ़ के नेहरू बाल मन्दिर शिक्षा में रु हैं। यह सन्धा आज नगर की प्रमुख शिक्षण सन्धा मानी जाती है।

वे सन्धापन्थालय में आपने साइस इन्वॉक बनवाने के लिए 2 लाख का जन-सहयोग जुटाया है। वर्तमान विधानसभा के स्कूल में भी विज्ञान-प्रयोगशाला के लिए एक सान् रूप्य एकरन लिए थे।

ऐसे ही ता निष्ठ, अथ्यवगायी तथा कुशल प्रशासक हैं। हस्तनिगिन-पत्रिका तथा कार्यगोष्ठियों के आप बर्न्व्य भी आपका रुभान दृष्टव्य है।

आयोजन में



श्री नर्मदाशंकर उपाध्याय,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
घाटोय (वसिवाड़ा)

आयु 47 वर्ष, सेवा 25 वर्ष

श्री नर्मदाशंकर राज्य के उन विरले अध्यापकों में से हैं जिन्होंने अपने लम्बे कार्यकाल के दौरान शत-प्रतिशत परीक्षा-परिणाम की परम्परा को निभाया है। शैक्षिक-जागरूकता एवं प्रशासनिक कुशलता का अद्भुत सम्मिश्रण है आपके व्यक्तित्व में।

आप स्वयं पूर्व-नौवारी के साथ कक्षा लेते हैं तथा अध्यापकों को भी इसके लिए प्रेरित करते हैं। कई प्रयोजनाएँ आपने ली हैं—परीक्षा-सुधार, प्रभावी सुपरविजन, वर्तनी-सुधार, शाला-संगम, सेवारत-प्रशिक्षण कार्यक्रम, वार्मानुभव आदि।

हिन्दी व संस्कृत साहित्य में आपकी गहरी रचि है तथा एकाधिक बार आकाशवाणी से बातोंएँ प्रसारित कर चुके हैं। साक्षरता-प्रसार की दिशा में भी आपका योगदान अविस्मरणीय है। 'गड्डी साक्षर होगा' आन्दोलन में आपकी भूमिका की अनेक अधिकांशियों ने प्रभूत प्रशंसा की है।

जहाँ भी आप रहे, समुदाय ने आपकी प्रेरणा में प्रचुर मात्रा में जन सहयोग दिया। लगभग 2 लाल की राशि तथा 3 बीघा जमीन आपके प्रभाव में जुटाई गई। जनगणना कार्य में सेवाओं के लिए आप राष्ट्रपति का प्रशंसा-पत्र भी प्राप्त कर चुके हैं।

